ऋषिवंश

फसलें	डदासी
दाने तो इच्छा के बोए थे जहरीली फसलें क्यों उग आईं पढ़े लिखे लोगों ने सोचा था खुशहाली इस रस्ते आयेगी नई रोशनी में यह साफ दिखा सब कुछ मशीने खा जायेंगी जब कोई भी नहीं बचेगा तो विस्फोटक नीति क्यों बनाई देश बेचकर खाने वाले नेता बनकर आगे आये नौटंकी बाज कुछ मदारी सेवा का ईनाम पाये पेशेवर भुक्खड़ जन नायक है सत्ता की रबड़ी मलाई भोगवाद की अंधी खाई सुख और सुविधा के दल दल लाइलाज कई महामारी बरसे फिर प्रगतिशील बादल मन की गुलामी में जकड़ी है कैसे विज्ञान की रूलाई।	मन ऐसी कौन उदासी रे सपने ही तो टूटे हैं ना यह तो बात जरा सी रे तू ही एक नहीं दुखिया तू ही ना एक अकेला है काहे फिर इतना अधीर है सबने ही दुख झेला है सारी दुनिया प्यासी रे मन ऐसी कौन उदासी रे कोई छोड़ गया जाने दो खुद से प्रीत लगाले रे भीतर बाहर बड़ा अंधेरा मन का दीप जला ले रे सब ही तो यहां प्रवासी रे मन ऐसी कौन उदासी रे जग माया है माया ने तो सब को ही भरमाया है ठेस लगी पर तू बड़ भागी सार समझ तो पाया है यह माया कि किसकी दासी रे मन ऐसी कौन उदासी रे।
	सम्पर्क– उत्तरायण, मंदिर वाला घर डायवर्सल रोड सिविल लाइन, सतना, (म.प्र.)–485001